विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
शिवराजविजय प्रथम निःश्वास
गद्यांश व्याख्या

डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
दिनांक- 10/10/2020

कदलीदल कुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परमपवित्रपानीयं परस्सहस्त्रपुण्डरीक पटल परिलसितं पतत्रिकुल कूजित [strikethrough] पूजितं पयः-पूरपूरितं सर आसीत्। दक्षिणतश्चौको निर्झर-झर्झर-ध्वनि-ध्वनित-दिगन्तरः फलपटलाऽऽस्वाद-चपलित-चञ्चु-कुलाऽऽक्रमणाक्रिकविनत-शाख-शाखि-समूह ध्वनित व्याप्तः सुन्दरकन्दरः पर्वतखण्ड आसीत्।

शब्दार्थ-

कदलीदलकुञ्जायितस्य = केले के पत्तों से घिरे होने के कारण झाड़ी के समान प्रतीत होने वाली, एतत्कुटीरस्य = इस कुटिया के, समन्तात् = चारों तरफ, पुष्पवाटिका = फूलों का उद्यान, परम-पवित्रपानीयं = अत्यन्त पवित्र जलवाला, परस्सहस्त्रः = हजारों, पुण्डरीकपटल = श्वेत कमलों के समूह, परिलसित = शोभित पतत्रिकुल = पक्षियों के समूह द्वारा, कूजितपूजितं = कलरव से अलंकृत, दक्षिणतः = दक्षिण की ओर, निर्झरझर्झर ध्वनिध्वनितदिगन्तरः = झरने की झर्झर ध्वनि दिशाओं को गुञ्जाय मान करनेवाला

फलपटलाडम्बरेन = फल समूह के स्वाद से, चपलित = चञ्चल, चञ्चुः = चोंच, पतङ्गकुलाडम्बराधिक = खग समूह के आक्रमण से अधिक, विनत = नीचे की ओर झुकी हुई, शाखशाखि-समूह व्याप्तः = शाखाओं वाले वृक्ष से भरा ~~घिरा~~ हुआ, कन्दरः = गुफाओं वाला, पर्वतखण्डः = पहाड़ ~~का~~ का टुकड़ा अर्थात् पहाड़ी।

अर्थ =

चारों ओर से केले के पत्तों से घिरी होने के कारण कुञ्ज के समान प्रतीत होने वाले इस पर्णकुटीर के सब ओर पुष्पोद्यान था। पूर्व की ओर अतिशय पवित्र पेय जलवाला, हजारों श्वेत कमल-पुष्पों से सुशोभित, पक्षियों के कलरव से कूजित जलाधिक्य से सम्पूरित एक सरोवर था। दक्षिण दिशा में झरने की ~~एक~~ झर-झर ध्वनि से दिशाओं को ध्वनित करने वाली, फल खाने से चञ्चल चोंच वाले वृक्षों से व्याप्त तथा सुन्दर गुफाओं वाली एक पहाड़ी थी।

पद व्याख्या = कदलीदलकुञ्जायितस्य = कदलीदलैः कुञ्जायितं तस्य (तृ० त० पु०) 'कर्तुः क्यङ् सलोपश्च' सूत्र से क्यङ् = कुञ्जायित। पूर्वतः = पूर्व + तस् 'तसिला-

विलसत्कदलीकुञ्जः = इत्यनेन प्रेक्षत्वम्, परम-पवित्रपानीयम् = परमं पवित्रं पानीयं यस्य तत् (ब०हु०), पवित्रकुलकूजितपूजितम् = पतत्रिणां कुलस्य कूजितेन पूजितम् (तत्पु०) दक्षिणतः = दक्षिण + तस्, चपलित = चपल + इतच्, पतङ्गः = पक्षी पतङ्गौ, पक्षिसूर्यौ च इत्यमरः, विनत = वि + नम् + क्त, शाखिनः = वृक्षाः, शाखा + इनि, सुन्दरकन्दरः = सुन्दराः कन्दराः यस्मिन् सः (ब०हु०)।

विशेष

इस अवतरण में प्राकृतिक सौन्दर्य का सुन्दर निरूपण किया गया है। कुटीर को कदलीदल के कुञ्ज के समान माना गया है। अतः यहाँ लुप्तोपमा अलंकार है। प्रत्येक पङ्क्ति में अनुप्रास की छटा रमणीय है। शब्द संयोजना के अनुसार गौणी रीति का प्रयोग हुआ है। इति।।